❍ 21 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बाप से जो राय मिलती है, उसी पर चले ?*

➢➢ *पवित्रता की राखी बाँधी ?*

➢➢ *एक पास शब्द की स्मृति द्वारा किसी भी पेपर में फुल पास हुए ?*

➢➢ *स्वयं को परमात्म प्यार के पीछे कुर्बान किया ?*

────────────────────────

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

〰✧ *आपके बोल, कर्म और वृत्ति से हल्केपन का अनुभव हो। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विश्व पॉवर से उन्हों को भी पहचान दो। 95 परसेन्ट सबके दिलपसन्द बनो।* आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करे। इसमें सिर्फ सहनशक्ति को धारण करने की आवश्यकता है।

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं संगमयुगी कल्याणकारी आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को सदा संगमयुगी कल्याणकारी आत्मायें अनुभव करते हो? संगमयुग एक ही इस सृष्टि-चक्र में ऐसा युग है जो चढ़ती कला का युग है। और युग धीरे-धीरे नीचे उतारते हैं। सतयुग से कलियुग में आते हो तो कितनी कलायें कम हो जाती हैं? तो सभी युगों में उतरते हो और संगमयुग में चढ़ते हो। चढ़ने के लिए भी लिफ्ट मिलती है। सभी को लिफ्ट मिली है ना। बीच में अटक तो नहीं जाती है? ऐसे तो नहीं-कभी अटक जाओ, कभी लटक जाओ। ऐसी लिफ्ट मिलती है जो कभी भी न लटकाने वाली है, न अटकाने वाली है। *देखो, कितने लक्की हो जो कल्याणकारी युग में आये और कल्याणकारी बाप मिला। आपका भी आक्यूपेशन है विश्व-कल्याणकारी। तो बाप भी कल्याणकारी, युग भी कल्याणकारी, आप भी कल्याणकारी और आपका आक्यूपेशन भी विश्व-कल्याणकारी।*

〰✧ तो कितने लक्की हो! अच्छा, यह लक्क कितना समय चलेगा? सारा कल्प या आधा कल्प? जो कहते हैं आधा कल्प, वह हाथ उठाओ। जो कहते हैं सारा कल्प, वह हाथ उठाओ। सभी राइट हो। क्योंकि आधा कल्प राज्य करेंगे, आधा कल्प पूज्य बनेंगे। तो यह भी लक्क ही है। *सदा मैं विश्व-कल्याणकारी आत्मा हूँ-इस स्मृति में रहने से जो भी कर्म करेंगे वह कल्याणकारी करेंगे। कल्याणकारी समझने से संगमयुग जो कल्याणकारी है वह भी याद आता है और कल्याणकारी बाप भी स्वत: याद आता है। सिर्फ कल्याणकारी नहीं, विश्व-

कल्याणकारी बनना है।*

~✧ सबसे बड़े भाग्य की निशानी यह है जो संगमयुग पर साधारण आत्मा बने हो। अगर साहूकार होते तो बाप के नहीं बनते, सिर्फ कलियुग की साहूकारी ही भाग्य में मिलती। तो साधारण बनना अच्छा है ना। *स्थूल धन से साधारण हो लेकिन ज्ञान-धन से साहूकार हो। तो खुशी है ना कि बाप ने सारे विश्व में से हमें अपना बनाया। सारा दिन खुशी में रहते हो? मुरली रोज सुनते हो? कभी मिस तो नहीं करते? मिस करते हो तो फालो फादर नहीं हुआ ना। ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की।*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

~✧ 'बापदादा, सदा हर कदम में, हर संकल्प में उडती कला वाले बच्चों को देख रहे हैं। सेकण्ड में अशरीरी भव का वरदान मिला और सेकण्ड में उडा।' *अशरीरी अर्थात ऊँचा उडना। शरीर भान में आना अर्थात पिंजडे का पंछी बनना।*

~✧ इस समय सभी बच्चे अशरीरी भव के वरदानी, उडते पंछी बन गये हो। यह संगठन स्वतन्त्र आत्मायें अर्थात उडते पंछियों का है। सभी स्वतन्त्र हो ना?

ऑर्डर मिले अपने स्वीट होम में चले जाओ तो कितने समय में जा सकते हो?

~✧ सेकण्ड में जा सकते हो ना। *आर्डर मिले, अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों की किरणों द्वारा अंधकार में रोशनी लाओ, ज्ञान सूर्य बन, अंधकार को मिटा लो,* तो सेकण्ड में यह बेहद की सेवा कर सकते हो? ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य बने हो?

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~✧ *एक ही विश्व की हास्पिटल है तो चारों ओर के रोगी कहाँ जायेंगे? एमर्जेन्सी केसेज़ की लाइन होगी। उस समय क्या करेंगे? अमर भव का वरदान तो देंगे ना।* स्व अभ्यास के आक्सीजन द्वारा साहस का श्वास देना पड़ेगा। *होपलेस केस अर्थात् चारो ओर के दिल शिकस्त के केसेज़ ज्यादा आयेंगे। ऐसी होपलेस आत्मओं को साहस दिलाना यही श्वाँसस भरना है। तो फटाफट आक्सीजन देना पड़ेगा।* उस स्व अभ्यास के आधार पर ऐसी आत्माओं को शक्तिशाली बना सकेंगे! *इसलिए फुर्सत नहीं है, यह नहीं कहो। फुर्सत है तो अभी है फिर आगे नहीं होगी।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

˳˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

——————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सदा ख़ुशी में रह, स्वर्ग की बादशाही के नशे में रहना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा की यादो में खोयी... मै आत्मा अपनी खुशियो के खजाने को गिनने में मशगूल हूँ... और अपनी ईश्वरीय अमीरी को देख देख मुस्करा रही हूँ... कितना प्यारा अनोखी खुशियो से भरा जीवन मीठे बाबा ने सौगात सा दे दिया है... तभी मीठे बाबा पलक झपकते ही वहाँ उपस्थित होकर... मुझे खुशहाल देख जेसे, नयनों से कह रहे... *बच्चों की खुशियो में ही मुझ पिता की खुशियां समायी है.*..

❉ *मीठे बाबा आज खुशियो की बरसात मेरे मन आँगन में बिखराते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... अब दुःख के दिन खत्म हो गए है... *अब अथाह खुशियो भरे मीठे दिन आ गए है..*. अब ईश्वर पिता जीवन में आ गया है... चारो ओर खुशियो की बरसात है... इस नशे में सदा डूबे रहो कि सुख शांति प्रेम के मीठे पल आये की आये..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के रूप में भगवान को सम्मुख देख देख पुलकित हूँ और कह रही हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा... *ऐसा प्यारा ईश्वरीय साथ भरा जीवन तो कल्पनाओ में भी कभी न था..*. आज आपको पाने की ख़ुशी से छलक रहा मन... जीवन की सच्चाई है... और मीठे सुख मुझे अपनी बाँहों में

पुकार रहे है..."

❊ *प्यारे बाबा मुझे अपनी बाँहों में दुलारते हुए ज्ञान धारा को बहाते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... जो देवताई सुख कल्पनाओ से परे थे... *ईश्वर पिता उन सुख भरे खजानो को आप बच्चों की राहो में फूलो सा बिखराया है.*.. इस ख़ुशी में सदा झूमते रहो... अपने मीठे सुखो की यादो में खोये रहो..."

➽ _ ➽ *मै आत्मा मीठे बाबा के वरदानों की छत्रछाया में स्वयं को भरपूर करते हुए बोली :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... दुखो के जंगल में सुख की एक बून्द को तरसती... *मै आत्मा आज स्वर्ग की बादशाही पा रही हूँ..*. कितना प्यारा मीठा और खुबसूरत भाग्य है... मै आत्मा आपके सारे खजानो की मालिक बन गयी हूँ..."

❊ *मीठे बाबा रूहानी दृष्टि देते हुए और ज्ञान रत्नों से मुझे श्रंगारते हुए बोले :-* "मीठे लाडले फूल बच्चे... ईश्वरीय श्रीमत पर चलकर जो सुखो की दौलत पायी है... उसके नशे में खोये रहो... संगम की यही खुशियां देवताई सुखो में बदल कर जीवन को खुशियो से महकायेंगी... *इन मीठे पलो के सुख को यादो में चिर स्थायी बनाओ.*.."

➽ _ ➽ *मै आत्मा प्यारे बाबा को अपनी मुस्कराहट से जवाब देते हुए कहती हूँ :-* "मीठे बाबा सच्चे ज्ञान को पाकर सारी भटकन से छूट गयी हूँ और *आपकी छत्रछाया में गुणवान शक्तिवान बनकर सच्ची खुशियो में खिलखिला रही हूँ..*. देवताई सुखो भरा स्वर्ग अपनी तकदीर में लिखवा रही हूँ..." अपनी खुशियो की चर्चा मीठे बाबा से कर मै आत्मा कार्य पर लौट आयी..." इन मीठी ईश्वरीय यादो को दिल में समेट कर मै आत्मा अपने जगत मे आ गयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप की जो राय मिलती है, उस पर ही चलना है*"

➳ _ ➳ कर्मयोगी बन हर कर्म करते, कदम - कदम पर सुप्रीम सर्जन *अपने शिव पिता परमात्मा से राय लेते, उनकी श्रीमत पर चल अपने दैनिक कर्तव्यों को पूरा करके, एकांत में अपने सुप्रीम सर्जन शिव बाबा की याद में मैं मन बुद्धि को स्थिर करके बैठ जाती हूँ* और विचार करती हूँ कि 5 विकारों रूपी ग्रहण ने कैसे मुझ आत्मा को बिल्कुल ही रोगी बना दिया था! मेरे सुंदर सलौने सोने के समान दमकते स्वरूप को इन विकारों की बीमारी ने आयरन के समान बिल्कुल ही काला कर दिया था।

➳ _ ➳ शुक्रिया मेरे सुप्रीम सर्जन शिव पिता परमात्मा का जो ज्ञान और योग की दवाई से मुझ बीमार आत्मा का उपचार कर मुझे फिर से स्वस्थ बना रहें हैं। *मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी हुई विकारों की कट को उतार, ज्ञान अमृत और योग अग्नि से हर रोज मुझे प्युरीफाई करके रीयल गोल्ड के समान फिर से चमकदार बना रहें हैं*। अपने सुप्रीम सर्जन शिव बाबा को याद करते - करते अब मैं अपने मन बुद्धि को अपने सुंदर सलौने ज्योति बिंदु स्वरूप पर एकाग्र करती हूँ जो हर रोज ज्ञान और योग की खुराक खाकर सोने के समान उज्जवल बनता जा रहा है।

➳ _ ➳ देख रही हूँ मन बुद्धि के नेत्रो से अब मैं अपने सत्य ज्योतिर्मय स्वरूप को। *अपनी स्वर्णिम किरणे बिखेरता एक चमकता हुआ सितारा भृकुटि के मध्य में जगमगाता हुआ मुझे स्पष्ट दिखाई दे रहा है*। मेरा यह दिव्य ज्योतिर्मय स्वरूप मुझे असीम आनन्द की अनुभूति करवा रहा है। अपने इस सम्पूर्ण निर्विकारी स्वरूप में मैं आत्मा स्वयं को सातों गुणों और सर्वशक्तियों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ। *अपने इस सतोप्रधान स्वरूप में स्थित हो कर अब मैं अपना सम्पूर्ण ध्यान परमधाम में विराजमान अपने शिव पिता पर केंद्रित करती हूँ*।

`

➳ _ ➳ अशरीरी बन उनकी याद में बैठते ही मन उनसे मिलने के लिए बेचैन हो उठता है और मैं आत्मा उनसे मिलने के लिए जैसे ही उनका आह्वान करती हूँ मैं स्पष्ट अनुभव करती हूँ कि *मेरे सुप्रीम सर्जन मेरे शिव पिता परमात्मा एक ज्योतिपुंज के रूप में अपनी सर्वशक्तियों रूपी अनन्त किरणों को चारों और फैलाते हुए परमधाम से नीचे उतर कर मेरे सामने उपस्थित हो गए हैं और आ कर अपनी सर्वशक्तियों की किरणों रूपी बाहों में मुझे भर लिया है*। अपने शिव पिता परमात्मा की किरणों रूपी बाहों में समा कर इस नश्वर देह और देह की दुनिया को अब मैं बिल्कुल भूल गई हूँ। केवल मेरे सुप्रीम सर्जन शिव बाबा और मुझ पर निरन्तर बरसता हुआ उनका असीम प्यार मुझे दिखाई दे रहा है।

➳ _ ➳ अपनी बाहों के झूले में झुलाते हुए मेरे मीठे शिव बाबा अब मुझे अपने साथ इस छी - छी विकारी दुनिया से दूर, अपने निर्विकारी धाम की ओर ले कर जा रहे हैं। *एक चमकती हुई ज्योति मैं आत्मा स्वयं को महाज्योति अपने शिव पिता की किरणों रूपी बाहों में समाये, साकारी दुनिया से दूर ऊपर की ओर जाते हुए मन बुद्धि रूपी नेत्रों से स्पष्ट देख रही हूँ*। पांच तत्वों की इस दुनिया के पार, सूक्ष्म लोक से भी पार अपने शिव पिता के साथ मैं पहुंच गई निर्वाणधाम अपने असली घर। शिव पिता के साथ कम्बाइंड हो कर अब मैं स्वयं को उनकी सर्वशक्तियों से भरपूर कर रही हूँ ।

➳ _ ➳ मेरे सुप्रीम सर्जन शिव बाबा से आ रही सर्वशक्तियों का स्वरूप ज्वालामुखी बन कर मुझ आत्मा द्वारा किये हुए 63 जन्मो के विकर्मों को दग्ध कर रहा है। *विकारों की कट उतर रही है और मैं आत्मा सच्चा सोना बनती जा रही हूँ*। मुझ आत्मा की चमक करोड़ो गुणा बढ़ती जा रही है। स्वयं को मैं बहुत ही हल्का अनुभव कर रही हूं।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता की लाइट माइट से स्वयं को भरपूर करके डबल लाइट बन अब मैं वापिस साकारी दुनिया मे अपने साकारी तन में आ कर

विराजमान हो गई हूँ। *फिर से अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर हर कदम पर अपने सुप्रीम सर्जन शिव बाबा से राय ले कर अब मैं सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का पुरुषार्थ निरन्तर कर रही हूँ*। मेरे सुप्रीम सर्जन शिव बाबा से कदम - कदम पर मिलने वाली राय मेरे हर संकल्प, बोल और कर्म को श्रेष्ठ बना कर मुझे श्रेष्ठता का अनुभव करवा रही है।

――――――――――――――――――――

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं एक पास शब्द की स्मृति द्वारा किसी भी पेपर में फुल पास होने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं पास विद ऑनर आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

――――――――――――――――――――

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा स्वयं को परमात्म प्यार के पीछे कुर्बान करती हूँ ।*
✺ *मैं सफलतामूर्त आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं सहजयोगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

――――――――――――――――――――

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप को देखा - *ब्रह्मा बाप ने अपने को कितना नीचे किया - इतना निर्मान होकर सेवाधारी बना जो बच्चों के पाँव दबाने के लिए भी तैयार। बच्चे मेरे से आगे हैं, बच्चे मेरे से भी अच्छा भाषण कर सकते हैं।* "पहले मैं" कभी नहीं कहा। आगे बच्चे, पहले बच्चे, बड़े बच्चे कहा, तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है, ऊँचा जाना है। तो इसको कहा जाता है - 'सच्चे नम्बरवन योग्य सेवाधारी'। लक्ष्य तो सभी का ऐसा ही है ना!

✺ *"ड्रिल :- ब्रह्मा बाप समान निर्माणचित होकर सेवा करना।"*

➳ _ ➳ गुलाबी गुलाबी सा मौसम, सर्द ठंडी हवाएं, लम्बे से खजूर के पेड़ पर इठलाती हुई सर्द हवाएँ और गुलाबी समन्दर की अठखेलियां करती हुई लहरे... और उस स्थान पर मैं एक ऊँचे से मिट्टी के पहाड़ पर बैठी हुई हूँ... जहां से मैं ये वातावरण फील करती हूं... चारों तरफ भीनी भीनी मोगरे के फूलों की खुशबू फैल रही है... और जैसे-जैसे यह खुशबू हवाओं में बिखर रही है... यहां का वातावरण एकदम खुशनुमा और शीतलता पूर्वक लग रहा है... और मैं इस अवस्था में परमपिता से योग लगा रही हूं... *हल्की खुली हुई आंखों से मैं अपने आपको आत्मिक रूप में देख रही हूं... और परमपिता से सीधा संपर्क में आने से मेरी आत्मा से अनेक रंग बिरंगी किरणें निकलकर इस वातावरण में फैल रही है...*

➳ _ ➳ और कुछ समय बाद मैं अपने आप को खुशबू में परिवर्तन कर उड जाती हूं... और एक ऐसे स्थान पर आ पहुँचती हूं... यहां से मुझे इस दृश्य का एकदम साफ नजारा दिखाई दे रहा है... मैं अपनी खुशबू को बहुत गहराई से अनुभव कर रही हूं... और *अपनी खुशबू को एक ऐसे स्थान पर अनुभव करती हूं... जहां पर एक आश्रम में गुरु अपने शिष्यों को नई शिक्षा दे रहे हैं... जिसमे

गुरु आश्रम में स्वयं झाड़ू निकाल रहे हैं और सभी विद्यार्थी खड़े होकर उन्हें देख रहे हैं... मैं अपनी खुशबू से और बाबा से साकाश लेते हुए उस आश्रम में अपनी पवित्र खुशबूनुमा किरणें फैला रही हूं...*

➽ _ ➽ मेरी खुशबू जैसे ही गुरूजी के पास जाकर उन्हें छूती है तो उन्हें मेरे वहां होने का आभास होता है... और मेरी भावनाओं को समझते हुए मुझे कहते हैं *कि कई बार हमें दूसरों को उनसे नीचे दिखाना पड़ता है क्योंकि इससे उनकी स्थिति हमसे ऊपर होती है... और वह अपने आप को और भी तीव्र पुरुषार्थी समझने लगते हैं... और इस आभास से वह आगे बढ़ने का रास्ता सहज ही खोज लेते हैं... इसलिए मैं आज यहां अपने शिष्यों को स्वयं आश्रम के छोटे-छोटे काम करना सिखा रहा हूं... मुझे देखकर उन्हें यह आभास हो रहा है कि ये हमसे ऊंची स्थिति में होने के कारण भी इतना छोटा काम कर रहे हैं... ताकि हमें कुछ सिखा सके... जिससे हम अपने आपको अब और आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे...*

➽ _ ➽ इतना सुनकर मैं वहां से अपनी खुशबू बिखेरते हुए उसी स्थान पर आ जाती हूं... जहां पर गुलाबी गुलाबी मौसम हो रहा है... समुंद्र की गुलाबी लहरें हवाओं से अठखेलियां खेल रही है... मैं अभी खुली हुई आंखों से अपने परमपिता से योग लगा रही हूं और अपनी गुलाबी किरणें इस सुंदर वातावरण में बिखेर रही हूं... *मैं बाबा से आती हुई किरणों को अपने अंदर समाती जा रही हूं... और बाबा से मन ही मन यह कह रही हूं... बाबा आपकी यह अद्भुत दी हुई अनमोल शिक्षाएं मैं अपने अंदर हमेशा के लिए संभाल लूंगी... और अपने चाल चलन और पुरुषार्थ से हमेशा आपका नाम बाला करूंगी... इन संकल्पों से मेरी आंतरिक उर्जा बढ़ती जा रही है... मेरा यह शरीर हवा के जैसा हल्का लग रहा है... और मुझे आभास हो रहा है... मानो मैं स्वयं परमपिता की कोमल गोद में बैठकर उनसे रूह रूहान कर रही हूं...*

➽ _ ➽ और मैं अपने सामने एक हवा के समान हल्की स्थिति को अनुभव करते हुए... ब्रहमा बाबा को अपने सामने ईमर्ज करती हूं... और उनसे दृष्टि लेते हुए मैं अपने आप को पूर्ण रूप से सफेद प्रकाशमयी अवस्था को अनुभव करती हूं... और *मैं हमेशा यह प्रयास करने का संकल्प लेती हूं... कि आज से जो भी

आत्माएं मेरे सामने आएंगी मेरे साथ संपर्क में आएंगे उन्हें हमेशा परमात्मा के बच्चे कहकर संबोधित करूंगी... सदा निर्माणचित् अवस्था में स्थित रहूंगी... अपने में इन संस्कारों का निर्माण करूँगी... और इन कुछ संकल्पों के बाद मैं अपने आप को उस गुलाबी वातावरण के अंदर पूरी तरह समा लेती हूं... और परमात्मा की गोद में झूला झूलने लगती हूं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔